



Bolne Ke Fitne (Hindi)

हफ्तावार रिसाला : 478
Weekly Booklet : 478

बोलने के फ़ितने

(अमीरे अहले सुन्नत की किताब “गुफ्तगू के आदाब” से आठवीं किस्त)

(सफ़हात : 16)

बारते ज़ियादा ख़ताएं ज़ियादा	04
वहशते क्रूर से बचाने वाला अमल	05
हिक्मते लुक्मान क्या है ?	08
तीन सूडानी भी अहले जन्नत के सरदार	11

शेख़े तरीक़त, अमीरे अहले सुन्नत, बानिये दावते इस्लामी, हज़रते अल्लामा मौलाना अबू बिलाल

मुहम्मद इल्यास अक्तार क़ादिरि रज़वी دَامَتْ بَرَكَاتُهُمُ
الْعَالِيَةِ

أَلْحَمْدُ لِلَّهِ رَبِّ الْعَالَمِينَ وَالصَّلَاةُ وَالسَّلَامُ عَلَى خَاتِمِ النَّبِيِّينَ ط
أَمَّا بَعْدُ! فَأَعُوذُ بِاللَّهِ مِنَ الشَّيْطَانِ الرَّجِيمِ ط بِسْمِ اللَّهِ الرَّحْمَنِ الرَّحِيمِ ط

बोलने के फ़िले⁽¹⁾

दुआए अन्तार : या अल्लाह पाक ! जो कोई 16 सफ़हात का रिसाला “बोलने के फ़िले” पढ़ या सुन ले उसे ज़बान के फ़िलों से बचा दुनिया व आखिरत की भलाइयां नसीब फ़रमा, उस को मां बाप समेत जन्नतुल फ़िरदौस में बे हिसाब दाखिला अता फ़रमा । اٰمِيْنَ بِجَاهِ خَاتِمِ النَّبِيِّينَ صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ ।

दुरूद शरीफ़ की फ़ज़ीलत

सहाबिए मुस्तफ़ा हज़रते जाबिर رَضِيَ اللهُ عَنْهُ के वालिदे गिरामी हज़रते समुरह सुवाई رَضِيَ اللهُ عَنْهُ रिवायत फ़रमाते हैं कि हम सरकारे आली वक्रार मुहम्मद रَضِيَ اللهُ عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ के दरबारे आलीशान में हाज़िर थे कि एक शख्स हाज़िर हो कर अर्ज़ गुज़ार हुवा : या रसूलल्लाह رَضِيَ اللهُ عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ ! अल्लाह पाक की बारगाह में सब से अच्छा अमल कौन सा है ? तो महबूबे खुदा, सरवरे अम्बिया रَضِيَ اللهُ عَلَيْهِ وَآलِهِ وَسَلَّمَ ने इरशाद फ़रमाया : “सच बोलना और अमानत अदा करना ।” (राविए हदीस हज़रते समुरह رَضِيَ اللهُ عَنْهُ फ़रमाते हैं :) मैं ने अर्ज़ की : या रसूलल्लाह रَضِيَ اللهُ عَلَيْهِ وَآलِهِ وَسَلَّمَ ! मज़ीद कुछ इरशाद फ़रमाइए ! फ़रमाया : “कसरते ज़िक्र और मुझ पर दुरूदे पाक पढ़ना कि येह अमल फ़क्र (यानी गुर्बत) को दूर करता है ।”

(القول البدیع، ص 273 مختصر)

बहरे रफ़्तर् मर्ज व ज़हमत व रंज व कुल्फ़त ढूंडते फिरते हैं वोह लोग कहां का तावीज़ तुम पढ़ो साहिबे लौलाक पर कसरत से दुरूद है अज़ब दर्दे निहां और अमां का तावीज़

صَلُّوا عَلَى الْحَبِيبِ ❀❀❀ صَلَّى اللهُ عَلَى مُحَمَّدٍ

1... येह मज़मून अमीरे अहले सुन्नत दَامَتْ بَرَكَاتُهُمُ الْعَالِيَه की किताब “फ़ुज़ूल बातों से बचने की फ़ज़ीलत” सफ़हा 104 ता 115 से लिया गया है ।

ज़बान की आफ़तें बहुत ज़ियादा हैं

सहाबिए रसूल हज़रते सय्यिदुना अब्दुल्लाह इब्ने मसऊद رَضِيَ اللَّهُ عَنْهُ ने फ़रमाया कि ज़बान को हर चीज़ से ज़ियादा क़ाबू में रखने की ज़रूरत है। (149/9, مُعْजَمٌ كَبِيرٌ) (क्योंकि ज़बान की आफ़तें बहुत ज़ियादा हैं) इन्सान के सर गुनाहों का बोझ लदवाने में ज़बान सब आज़ा (यानी PARTS) से बढ़ कर है। गुनाहों से बचाना सब आज़ा को ज़रूरी है लेकिन (दीगर आज़ा के मुक़ाबले में) ज़बान की देख भाल और इस पर क़ाबू पाना सब से बढ़ कर अहम व ज़रूरी है।

उमर बिन अब्दुल अज़ीज़ फूट फूट कर रोए

हज़रते अबू अब्दुल्लाह رَحْمَةُ اللَّهِ عَلَيْهِ फ़रमाते हैं कि मैं ने सुना कि एक आलिम साहिब हज़रते उमर बिन अब्दुल अज़ीज़ رَحْمَةُ اللَّهِ عَلَيْهِ के सामने कहने लगे : “ख़ामोश आलिम” भी बोलने वाले आलिम ही की तरह होता है। फ़रमाया : मेरा ज़ेहन येह है कि बोलने वाला आलिम क्रियामत के दिन चुप रहने वाले आलिम से अफ़ज़ल होगा इस लिए कि बोलने वाले आलिम का नफ़ा लोगों को पहुंचता है जब कि चुप रहने वाले आलिम को सिर्फ़ ज़ाती फ़ायदा मिलता है। वोह आलिम साहिब बोले : “या अमीरल मोमिनीन ! क्या आप बोलने के फ़ितनों से ना वाकिफ़ हैं ?” हज़रते उमर बिन अब्दुल अज़ीज़ رَحْمَةُ اللَّهِ عَلَيْهِ येह सुन कर फूट फूट कर रोए। (648: الصّمت، 7/345، قول نمبر) अल्लाह रब्बुल इज़ज़त की उन पर रहमत हो और उन के सदक़े हमारी बे हिसाब मग़फ़िरत हो। اُمَيِّنْ بِجَاهِ خَاتِمِ النَّبِيِّينَ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ

हिकायत की वज़ाहत

ऐ आशिक़ाने रसूल ! हमारे बुज़ुर्गों की एहतियातें और ज़ब्बए ख़ौफ़े खुदा मरहबा ! अलबत्ता इस बात में कोई शक़ नहीं कि मोहतात उलमाए दीन का

वाज़ो नसीहत फ़रमाना, शरई अहकाम बताना, मुबल्लिगीन का सुन्नतों भरा बयान करना, नेकी की दावत देना, ख़ामोशी के मुक़ाबले में अफ़ज़ल तरीन अमल है। मगर उन आलिम साहिब का हज़रते उमर बिन अब्दुल अज़ीज़ رَحْمَةُ اللهِ عَلَيْهِ की बारगाह में इब्रत के लिए येह अर्ज़ करना कि “क्या आप बोलने के फ़ितनों से ना वाकिफ़ हैं ?” अपनी जगह दुरुस्त था और अमीरुल मोमिनीन رَحْمَةُ اللهِ عَلَيْهِ का ख़ौफ़े ख़ुदा से ज़ारो क़ितार रोना भी उन आलिमे दीन के इन अल्फ़ाज़ की तह तक पहुंचने की वजह से था। वाक़ेई अच्छा बोलना अगर्चे मख़्लूक के लिए नफ़ा बरख़्श है लेकिन ख़ुद बोलने वाले के लिए इस में कई ख़तरात मौजूद हैं मसलन अगर अच्छा मुबल्लिग़ है तो अपनी ख़ुश बयानी और गुफ़्तगू की रवानी पर दूसरों की तरफ़ से मिलने वाली दाद व तहसीन के सबब या सिर्फ़ अपनी सलाहिय्यत पर घमण्ड (यानी तकब्बुर) के बाइस या अपने आप को “कुछ” समझने और दूसरों को हक़ीर (यानी घटिया) जानने या सिर्फ़ नफ़सानियत की वजह से दूसरों पर धाक़ बिठाने और अपनी वाह वा करवाने की ख़ातिर मुश्किल या ख़ूबसूरत अल्फ़ाज़ व मुहावरे वग़ैरा बोलते रहने वग़ैरा वग़ैरा फ़ितनों में पड़ सकता है। अगर अरबी बोल चाल पर ऊबूर हुवा तो बात व बयानात में अपनी अरबी दानी का सिक्का जमाने की ख़ातिर ख़ूब अरबी मक़ूलों वग़ैरा के इस्तिमाल के फ़ितने में मुब्तला हो सकता है, इसी तरह जिस की आवाज़ अच्छी हो वोह भी ख़तरों में घिरा रहता है, चूँकि लोग अक्सर ऐसों की तारीफ़ करते हैं जिस पर “फूल” कर उस के मग़रूर हो जाने, अच्छी आवाज़ को अल्लाह पाक की अता समझने के बजाए अपना कमाल समझ बैठने वग़ैरा ग़लतियों का ख़दशा (यानी डर) रहता है। तो उन आलिमे दीन का “बोलने” के मुतअल्लिक़ ख़बरदार करना दुरुस्त है और वाक़ेई जो मुबल्लिग़ बयान की जाने वाली बुरी सिफ़ात रखता हो उस का बोलना उस के अपने हक़ में बहुत बड़ा फ़ितना और बरबादिए आखिरत का सामान है अगर्चे मख़्लूक को उस से नफ़ा पहुंचता हो।

मुतअस्सिर करने के लिए बात चीत के मुख्तलिफ़ अन्दाज़ इख़्तियार करना

लोगों को अपने से मुतअस्सिर करने के लिए बना सजा कर बातें करना और यूँ उन्हें अपना मोतक्रिद (यानी अक़्रीदतमन्द) बनाना बहुत ज़ियादा बुरा काम है, अब जो हदीसे पाक बयान की जा रही है इस से वोह लोग दर्स हासिल करें जो अगर्चे बज़ाहिर नेक भी होते हैं लेकिन हर वक़्त “मैं मैं” करते रहते हैं और लोगों को अपनी ज़ात का गिरवीदा करने की कोशिश करते रहते हैं।

हज़रते अबू हुरैरा رَضِيَ اللَّهُ عَنْهُ से रिवायत है, सरकारे मदीना صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ ने इरशाद फ़रमाया : “जिस ने बात कहने के मुख्तलिफ़ अन्दाज़ इस लिए सीखे कि इस के ज़रीए लोगों के दिलों को कैद करे (यानी लोगों को अपना अक़्रीदतमन्द बनाए), अल्लाह पाक क्रियामत के दिन उस के न फ़र्ज क़बूल फ़रमाएगा न नफ़ल।”

(अबु दाउद, 4/391, حدیث: 5006)

मुफ़्ती अहमद यार ख़ान رَحْمَةُ اللَّهِ عَلَيْهِ इस हदीसे मुबारका की वज़ाहत में फ़रमाते हैं : एक मज़मून को मुख्तलिफ़ इबारतों से बयान करना, अच्छी इबारत बोलना, झूठी बात सच्ची कर के दिखाना यानी जो आलिम लच्छेदार गुफ़्तगू ज़न्नाटे की तक्ररिं करना इस लिए सीखे कि लोग उस के जाल में फंस जाएं, लोग उस के मोतक्रिद (यानी अक़्रीदतमन्द) हो जावें।

(मरआत, 6/439)

बातें भी ज़ियादा ख़तराएं भी ज़ियादा

बातूनी शख्स को झूट, ग़ीबत, चुगली, लोगों को गाली देना वग़ैरा वग़ैरा गुनाहों में मुब्तला हो जाने का ख़तरा रहता है। इसी तरह मालदार शख्स को दौलत ज़ियादा होने की वजह से जुल्मो तकब्बुर वग़ैरा गुनाहों में पड़ने का ख़तरा रहता है। हज़रते सय्यिदुना हसन बसरी رَحْمَةُ اللَّهِ عَلَيْهِ फ़रमाते हैं ﴿1﴾ जो ज़ियादा बोलता

होगा उस की ग़लतियाँ भी ज़ियादा होंगी ﴿2﴾ जिस का माल ज़ियादा होगा उस के गुनाह भी ज़ियादा होंगे और ﴿3﴾ जिस के अख़्लाक़ बुरे होंगे वोह मुब्तलाए अज़ाब होगा ।
(تنبيه الغافلین، ص 117)

जैसा सफ़र, वैसा ज़ादे सफ़र होना चाहिए

मशहूर सहाबी हज़रते अबू ज़र ग़िफ़ारी رَضِيَ اللهُ عَنْهُ एक बार काबतुल्लाह शरीफ़ के पास खड़े हो कर फ़रमाने लगे : जो मुझे जानता है वोह तो जानता ही है और जो नहीं जानता वोह जान ले कि मैं जुन्दुब बिन जुनादह अबू ज़र ग़िफ़ारी हूँ, एक हमदर्द व मेहरबान मुसलमान भाई के पास आओ ! लोग आस पास जमा हो गए । तो फ़रमाने लगे : लोगो ! तुम में से कोई शख्स जब दुनिया के किसी शहर के सफ़र का इरादा करता है तो ज़ादे राह (यानी सामाने सफ़र) के बग़ैर सफ़र नहीं करता तो वोह शख्स कैसा है जो आख़िरत का सफ़र बिला ज़ादे राह करना चाहता है ? लोगों ने पूछा : ऐ अबू ज़र ! हमारा ज़ादे सफ़र क्या होना चाहिए ? फ़रमाया : “रात के अन्धेरे में दो रकअत नमाज़ क़ब्र की वृहशत (यानी घबराहट) से बचने के लिए और सख़्त गर्मी के रोज़े क्रियामत के दिन के लिए और मसाकीन पर सदक़ा करना ताकि तुम को सख़्त दिन के अज़ाब से नजात मिले और दूसरे बड़े बड़े उमूर के लिए हज़ करना । दुनिया को दो हिस्सों में तक्सीम कर लो, एक हिस्सा तलबे दुनिया के लिए और एक हिस्सा तलबे आख़िरत के लिए । इस के इलावा तीसरा हिस्सा बनाना मुज़िर (यानी नुक्सान देह) है, मुफ़ीद नहीं । इसी तरह अपनी बात चीत भी दो तरह की बना लो, एक वोह जो तुम्हारी दुनिया में काम दे, दूसरी वोह जो आख़िरत में काम आए और तीसरी मुज़िर (यानी नुक्सान देह) है, मुफ़ीद नहीं ।” फिर फ़रमाने लगे : “आह ! मुझे उस दिन के ग़म ने हलाक़ कर दिया है जिस की मेरे पास कोई तलाफ़ी (यानी इलाज) नहीं ।” अर्ज़ किया गया : वोह क्या है ?

फ़रमाया : “मेरी उम्मीदें मेरी उम्र से भी तज़ावुज़ कर (यानी आगे बढ़) गईं और मैं अपने अमल से गाफ़िल हो गया हूँ।”
(تنبيه الغافلین، ص 118)

प्यारे प्यारे इस्लामी भाइयो ! हज़रते अबू ज़र गिफ़ारी رَضِيَ اللهُ عَنْهُ निहायत ही परहेज़गार होने के बावजूद अपने बारे में इन्किसारन फ़रमा रहे हैं कि “मैं अपने अमल से गाफ़िल हो गया हूँ।” तो फिर हमारा क्या बनेगा ? कि हम तो कोई नेकी कर भी नहीं पाते और अगर टूटी फूटी इबादत कर भी डाली तो शैतान दिल में येह बात डाल देता है कि तू बहुत नेक है तू शरीफ़ आदमी है और शैतान की बातों में आ कर हम भी इस ख़ुश फ़हमी में मुब्तला हो जाते हैं कि हां ! वाक़ेई हम नेक आदमी हैं। इस वाक़िए से ख़ुसूसन हमें इन्किसार व अज़िज़ी का दर्स हासिल करना चाहिए कि ख़्वाह हम कितने ही नेक काम करें, खुद को गुनहगार ही तसव्वुर करना चाहिए।

घर में सुन्नतों भरा माहौल बनाने में ख़ामोशी का किरदार

ऐ अशिक़ाने रसूल ! बे ज़रूरत बात, हंसी मज़ाक़ और तू तड़ाक़ की आदात निकाल देने से घर में भी आप का वक्रार बुलन्द होगा और जब घर के अफ़राद आप के सन्जीदापन से मुतअस्सिर होंगे तो إِنَّ شَاءَ اللهُ उन के दिल पर आप की “नेकी की दावत” जल्द असर करेगी और घर में सुन्नतों भरा माहौल बनाने में आसानी हो जाएगी। चुनान्चे “दावते इस्लामी” के सुन्नतों भरे इज्तिमाअ में ख़ामोशी की अहमियत पर किया हुआ एक सुन्नतों भरा बयान सुन कर اَلْحَمْدُ لِلّٰهِ ! एक बातूनी इस्लामी भाई ने ख़ामोशी की आदत डालनी शुरू कर दी, سُبْحَانَ اللهِ ! इस का उन्हें फ़ायदा भी पहुंचने लगा, “अबुल फ़ुज़ूल” होने की वजह से घर के अफ़राद उन से बदज़न थे मगर जब से चुप रहना शुरू किया है, घर में उन की “पोज़ीशन” बन गई है और ख़ुसूसन उन की अम्मीजान जो कि उन से बेज़ार रहा

करती थीं अब खुश हो गई हैं, चूँकि पहले वोह बहुत “बक्की” (यानी बक बक के आदी) थे लिहाज़ा उन की अच्छी बातें भी बे असर हो जाती थीं मगर अब वोह अम्मीजान को जब भी कोई सुन्नत वगैरा बताते हैं तो वोह न सिर्फ़ दिलचस्पी से सुनती हैं बल्कि अमल करने की कोशिश भी करती हैं।

बढ़ता है ख़मोशी से वक्रार ऐ मेरे प्यारे घर वाले भी हो जाएंगे खुश आप से सारे

صَلُّوْا عَلَى الْحَبِيبِ ❀❀❀ صَلَّى اللهُ عَلَى مُحَمَّدٍ

ग़ैर ज़रूरी सुवालात की आफ़ात

हज़रते इमाम मुहम्मद बिन मुहम्मद बिन मुहम्मद ग़ज़ाली رَحْمَةُ اللهِ عَلَيْهِ फ़रमाते हैं : बे फ़ायदा गुफ़्तगू में से तुम्हारा दूसरे से ग़ैर ज़रूरी चीज़ के बारे में सुवाल करना भी है और इस तरह का सुवाल कर के तुम अपना भी वक़्त ज़ाए करोगे और दूसरे को भी जवाब देने के ज़रीए वक़्त ज़ाए करने पर मजबूर कर दोगे और ये भी उस वक़्त है जब सुवाल करने में कोई आफ़ात न हो वरना अक्सर सुवालात में उमूमन आफ़ात होती हैं। मिसाल के तौर पर तुम किसी से उस की इबादत के बारे में सुवाल करते हुए पूछो कि क्या तुम रोज़ादार हो ? अगर उस ने हां में जवाब दिया तो वोह अपनी इबादत का इज़हार करने वाला हुवा और यूं वोह रियाकारी में पड़ सकता है। अगर वोह रियाकारी में न भी पड़े तब भी उस की इबादत पोशीदा (यानी छुपी हुई) इबादत के रजिस्टर से ख़ारिज हो जाएगी और पोशीदा इबादत, अलानिया (यानी खुल्लम खुल्ला) इबादत से कई दर्जे फ़ज़ीलत रखती है और अगर वोह कहता है कि नहीं तो वोह झूट बोलने वाला होगा और अगर वोह ख़ामोश रहे तो वोह तुम्हें हक़ीर समझने वाला हुवा और इस सबब से तुम अज़ियत उठाओगे और अगर वोह जवाब देने में टाल मटोल से काम ले तो उसे मशक्क़त उठानी पड़ेगी तो तुम एक सुवाल के सबब उसे रियाकारी या झूट बोलने या हक़ीर जानने या जवाब को टालने की ज़िद में ले आए।

ऐसे ही तुम्हारा उस की दीगर इबादात के बारे में सुवाल करना है और इसी तरह गुनाह और हर उस चीज़ के बारे में सुवाल करना है जिसे वोह लोगों से छुपाता और इसे बताने से शर्माता है। इसी तरह अगर कोई दूसरे से गुप्तगू कर रहा हो और बाद अज़ गुप्तगू तुम उस से पूछो कि तुम क्या कह रहे थे और किस बारे में बात कर रहे थे ? और ऐसे ही रास्ते में तुम किसी शख्स को देख कर उस से दरयाप्त करो कि तुम कहां से आ रहे हो ? तो बाज़ अवकात कोई ऐसी रुकावट हाइल होती है जो उस को बताने से रोकती है और अगर बयान कर देता है तो उसे अज़ियत (यानी परेशानी) होती है और शर्म आती है और अगर वोह सच नहीं बोलता तो झूट में जा पड़ता है जिस का सबब तुम बनते हो। ऐसे ही तुम कोई ऐसा मस्अला पूछो जिस की तुम्हें हाज़त न हो और जिस से सुवाल किया गया होता है बाज़ अवकात उस का नफ़्स لا أدري (यानी मैं नहीं जानता) कहने पर राज़ी नहीं होता और यूं वोह मालूमात न होने के बावुजूद जवाब दे देता है। (गैर ज़रूरी सुवालात की मिसालें आगे आ रही हैं)

(احياء العلوم، 3/140)

सय्यिदुना लुक्मान हकीम رَحْمَةُ اللَّهِ عَلَيْهِ की हिक्मत

हज़रते सय्यिदुना लुक्मान हकीम رَحْمَةُ اللَّهِ عَلَيْهِ से अर्ज़ की गई : आप की हिक्मत क्या है ? इरशाद फ़रमाया : “जिस चीज़ की मुझे ज़रूरत नहीं होती उस के बारे में सुवाल नहीं करता और जो चीज़ मुझे फ़ायदा नहीं देती उस में नहीं पड़ता।”

(इहयाउल इलूम (उर्दू), 3 /345)

खामोशी दानाई है (वाक़िआ)

बे फ़ायदा गुप्तगू से मेरी मुराद इस किस्म के सुवालात नहीं क्यूंकि इन से तो गुनाह या ज़रर (यानी नुक़सान) पहुंचता है। बे फ़ायदा गुप्तगू की मिसाल वोह

रिवायत है जो हज़रते सय्यिदुना लुक्मान हकीम رَحْمَةُ اللهِ عَلَيْهِ के मुतअल्लिक मन्कूल (यानी बयान की गई) है। चुनान्चे अल्लाह पाक के प्यारे नबी हज़रते दाऊद عَلَيْهِ السَّلَام की खिदमत में एक बार हज़रते लुक्मान हकीम رَحْمَةُ اللهِ عَلَيْهِ हाज़िर हुए, उस वक़्त आप عَلَيْهِ السَّلَام ज़िरह (यानी फ़ौलाद का जालीदार कुर्ता जो लड़ाई में पहनते थे) बना रहे थे और चूँकि आप ने उस से पहले ज़िरह नहीं देखी थी इस लिए उसे देख कर तअज्जुब करने लगे और इस बारे में सुवाल करना चाहा तो “हिक्मत” के सबब सुवाल करने से बाज़ रहे। जब हज़रते दाऊद عَلَيْهِ السَّلَام ज़िरह बनाने से फ़ारिग हुए तो खड़े हुए और उसे पहन कर इरशाद फ़रमाया : “जंग के लिए ज़िरह क्या ही अच्छी चीज़ है।” यह सुन कर हज़रते लुक्मान हकीम رَحْمَةُ اللهِ عَلَيْهِ ने कहा : “खामोशी हिक्मत है मगर उस को इख्तियार करने वाले कम हैं।” यानी सुवाल के बग़ैर ही उस के मुतअल्लिक इल्म हो गया और सुवाल की ज़रूरत न रही।

(इहयाउल इल्म (उर्दू), 3 / 347) (141 / 3, احياء العلوم)

बे फ़ायदा गुफ़्तगू किसे कहते हैं ?

हज़रते इमाम मुहम्मद बिन मुहम्मद बिन मुहम्मद ग़ज़ाली رَحْمَةُ اللهِ عَلَيْهِ फ़रमाते हैं : बयान किया गया है कि हज़रते लुक्मान हकीम رَحْمَةُ اللهِ عَلَيْهِ एक साल तक हज़रते दाऊद عَلَيْهِ السَّلَام की बारगाह में इस इरादे से हाज़िर होते रहे कि उन्हें ज़िरह के बारे में बग़ैर सुवाल किए मालूम हो जाए। यह और इस तरह के सुवालात में जब नुक़सान और ऐब खुलना न हो नीज़ रियाकारी और झूट में मुब्तला होना न पाया जाए तो यह बे फ़ायदा गुफ़्तगू है और इसे छोड़ देना इस्लाम की खूबी से है। यह बे फ़ायदा गुफ़्तगू की तारीफ़ थी।

(इहयाउल इल्म (उर्दू), 3 / 345)

हज़रते लुक्मान हकीम के बारे में मालूमात

हज़रते लुक्मान हकीम رَحْمَةُ اللهِ عَلَيْهِ की शान बहुत बुलन्दो बाला है, कुरआने करीम पारह 21 में आप के नाम पर एक पूरी सूरत “सूरए लुक्मान” के नाम से मौजूद है। अल्लाह पाक सूरए लुक्मान आयत 12 में हिक्मते लुक्मान बयान करते हुए फ़रमाता है :

وَلَقَدْ آتَيْنَا لُقْمَانَ الْحِكْمَةَ أَنْ اشْكُرْ لِلَّهِ ۖ وَمَنْ يَشْكُرْ فَإِنَّا نِشْكُرْ لَهُ نَفْسِهِ ۚ

وَمَنْ كَفَرَ فَإِنَّ اللَّهَ عَزِيزٌ حَبِيدٌ ﴿١٧﴾

आसान तर्जमए कुरआन कन्जुल इरफ़ान : और बेशक हम ने लुक्मान को हिक्मत अता फ़रमाई कि अल्लाह का शुक्र अदा कर और जो शुक्र अदा करे तो वोह अपनी ज़ात के लिए शुक्र करता है और जो ना शुक्र करे तो बेशक अल्लाह बे परवाह है, हम्द के लाइक है।

लुक्मान हकीम कौन थे ?

सिरातुल जिनान जिल्द 7 सफ़हा 483 पर है : हज़रते वहब رَضِيَ اللهُ عَنْهُ का कहना है कि हज़रते लुक्मान رَحْمَةُ اللهِ عَلَيْهِ हज़रते अय्यूब عَلَيْهِ السَّلَام के भांजे थे जब कि (कुरआने करीम के) मुफ़स्सिर मक्कातिल (رَحْمَةُ اللهِ عَلَيْهِ) ने कहा कि हज़रते अय्यूब عَلَيْهِ السَّلَام की खाला के बेटे थे। आप ने हज़रते दाऊद عَلَيْهِ السَّلَام का ज़माना पाया और उन से इल्म हासिल किया। हज़रते दाऊद عَلَيْهِ السَّلَام के एलाने नुबुव्वत से पहले फ़तवा दिया करते थे और जब आप (यानी हज़रते दाऊद) عَلَيْهِ السَّلَام नुबुव्वत के मन्सब पर फ़ाइज़ हुए (यानी एलाने नुबुव्वत किया) तो हज़रते लुक्मान رَحْمَةُ اللهِ عَلَيْهِ ने फ़तवा देना बन्द कर दिया। आप رَضِيَ اللهُ عَنْهُ के नबी होने में इख़्तिलाफ़ है, अक्सर उलमा इसी तरफ़ हैं कि आप हकीम (यानी साहिबे हिक्मत व दानाई) थे नबी न थे।

(तफ़ीर بغوی، 3/423، تفسیر مدارک، ص 917)

हज़रते लुक्मान जन्नत के सरदारों में से हैं

हज़रते अब्दुल्लाह बिन अब्बास رَضِيَ اللهُ عَنْهُمَا से रिवायत है, ताजदार रिवालत صَلَّی اللهُ عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ ने इरशाद फ़रमाया : “सूडानियों की सोहबत इश्ख्तियार करो क्यूंकि उन में से तीन हज़रात अहले जन्नत के सरदारों में से हैं : ❶ हज़रते लुक्मान हकीम رَحْمَةُ اللهِ عَلَيْهِ ❷ हज़रते नजाशी رَحْمَةُ اللهِ عَلَيْهِ ❸ मुअज़्ज़िने (रसूल) हज़रते बिलाल رَضِيَ اللهُ عَنْهُ” (معجم کبیر، 11/158، حدیث: 11482)

हिक्मत की 4 तारीफ़ात

हिक्मत की कई तारीफ़ात (DEFINITIONS) हैं जिन में से “सिरातुल जिनान” जिल्द 7 सफ़्हा 484 पर ये चार बयान की गई हैं : ❶ हिक्मत अक्ल और फ़हम (यानी समझ) को कहते हैं ❷ हिक्मत वोह इल्म है जिस के मुताबिक़ अमल किया जाए ❸ हिक्मत मारिफ़त (यानी पहचान) और कामों में पुख्तगी (यानी मज़बूती) को कहते हैं ❹ हिक्मत ऐसी चीज़ है कि अल्लाह पाक उसे जिस के दिल में रखता है ये उस के दिल को रौशन कर देती है।

(تفسیر غارن، 3/470)

हज़रते लुक्मान तिब्ब (यानी इलाज) के भी हकीम थे

हज़रते अल्लामा इस्माईल हक्की رَحْمَةُ اللهِ عَلَيْهِ “रुहुल बयान” में लिखते हैं : हज़रते लुक्मान हकीम رَحْمَةُ اللهِ عَلَيْهِ तिब्ब (MEDICAL) और हक्की इल्मो हिक्मत के हकीम थे।

(تفسیر روح البیان، 7/73)

वॉशरूम में देर तक बैठने के नुक्सानात

हज़रते इकरिमा رَحْمَةُ اللهِ عَلَيْهِ बयान करते हैं : उन का आक्रा इस्तिन्जा खाने (यानी टॉयलेट। TOILET, में गया तो देर लगा दी, हज़रते लुक्मान رَحْمَةُ اللهِ عَلَيْهِ ने

आवाज़ दी : यहां देर तक बैठने से जिगर को नुक्सान पहुंचता है और बवासीर का मरज़ पैदा होता है और गर्मी सर को चढ़ जाती है, थोड़ी देर के लिए इस्तिन्जा खाने में बैठो और बहुत जल्द फ़ारिग हो कर आ जाओ। हज़रते लुक्मान के इस नुस्खे को लिख कर दरवाजे पर लटका दिया गया। (तफ़ीर ड़रमशूर, 6/510)

ज़बान व दिल बिगड़ जाएं तो...

हज़रते लुक्मान हकीम رَحْمَةُ اللهِ عَلَيْهِ के आक्रा ने कहा : बकरी ज़ब्ह कर के उस के सब से बेहतरीन दो हिस्से ले आइए, आप ज़बान व दिल निकाल कर ले गए। कुछ दिनों के बाद आक्रा ने उन से दोबारा कहा : बकरी ज़ब्ह कर के उस के सब से बदतरीन हिस्से ले आइए, आप ने फिर ज़बान व दिल ला कर हाज़िर कर दिए, आक्रा के पूछने पर हज़रते लुक्मान رَحْمَةُ اللهِ عَلَيْهِ ने कहा : अगर ज़बान व दिल सहीह हों तो सब से बेहतर हैं और अगर येह बिगड़ जाएं तो उन से बढ़ कर बुरी चीज़ कोई नहीं। (तफ़ीर طبری, 10/209)

फ़ुज़ूल सुवालात की मिसालें

❀ बग़ैर ज़रूरत पूछना : येह कितने में लिया ? वोह कितने में मिला ? फ़ुलां जगह प्लॉट का क्या भाव चल रहा है ? ❀ किसी के मकान में जाना हुवा या किसी ने नया मकान लिया तो सुवाल करना कि कितने का लिया ? कितने कमरे हैं ? किराया कितना है ? मकान मालिक (LANDLORD) कैसा है ? (मकान मालिक के मुतअल्लिक सुवाल बसा अवक्रात مَاذَا اللهُ ग़ीबत व तोहमत का दरवाज़ा खोलने का सबब बन सकता है मसलन कभी कुछ इस तरह गुनाहों भरा जवाब भी मिल सकता है : हमारा मालिक बहुत सख्त मिज़ाज / बे रहम / टेढ़ा / खूचड़ा / खर दिमाग़ / वायड़ा / कन्ज़ूस है) वग़ैरा वग़ैरा ❀ मुलाक्राती से पूछना :

आप के कितने बच्चे हैं ? बड़े बेटे (या बेटा) की उम्र कितनी है ? उस की मंगनी (या शादी) कर ली या नहीं ? ❀ इसी तरह जब कोई नई दुकान, कार या स्कूटर वगैरा खरीदे तो बिला वजह खरीदने वाले से उस का भाव, पायदारी (यानी मजबूती), नक़द, उधार, क्रिस्तों वगैरा से मुतअल्लिक सुवालात करना ❀ बेचारा मरीज़ जिस से बोला तक न जाता हो उस से इयादत करने वाले का बिला ज़रूरत तरह तरह के सुवालात और दवाओं वगैरा की तफ़्सीलात मालूम करना और अगर ऑपरेशन हुआ हो तो ज़ख़्म के टांकों (STITCHES) की तादाद तक पूछ लेना, हत्ता कि “शर्म की जगह” का मस्अला हो तब भी बाज़ उस की पूछगछ करते हुए नहीं शर्माते । इस तरह की फ़ुज़ूलिय्यात में औरतें भी मर्दों से किसी तरह पीछे नहीं रहतीं ❀ गर्मी या सर्दी के मौसम में इस की कमी ज़ियादती के मौक़े पर बिला ज़रूरत इस तरह की बातें करना मसलन गर्मी के मौसम में बाज़ अबुल फ़ुज़ूल का “उफ़ ! उफ़” करते हुए इस तरह कहना : एक तो आज कल सख़्त गर्मी है और ऊपर से बिजली भी बार बार चली जाती है ❀ इसी तरह सर्दियों में अदाकारी के साथ दांत बजाते हुए कहना : आज तो बहुत कड़के की सर्दी है ❀ अगर बारिश का मौसम है तो बिला ज़रूरत उस पर भी तब्सिरा करना : मसलन आज कल तो बारिशें बहुत हो रही हैं, हर तरफ़ पानी खड़ा हो गया है, इन्तिज़ामिया कीचड़ साफ़ करवाने का कोई खयाल नहीं करती वगैरा वगैरा ❀ इसी तरह मुल्की और सियासी हालात पर बिला निय्यते इस्लाह बेजा तब्सिरे, मुख़्तलिफ़ सियासी पार्टियों पर बिला वजह तन्कीदें ❀ किसी शहर या मुल्क का सफ़र किया है तो वहां के पहाड़ों और सब्ज़ा ज़ारों की ग़ैर ज़रूरी मन्ज़रकशी, मकानों और सड़कों की तफ़्सीलात का बिला ज़रूरत बयान वगैरा वगैरा ये सब फ़ुज़ूलगोई नहीं तो और क्या है ? अलबत्ता येह याद रहे कि फ़ुज़ूल बातों की जो मिसालें दी गई हैं उन के मुताबिक़

अगर हम किसी को बातें करता हुआ पाएं तो अपने आप को बदगुमानी से बचाएं क्योंकि बाज़ अवकाश जो बातें हमें फुज़ूल लग रही होती हैं वोह कहने वाला किसी दुरुस्त मक़सद के तहत कह रहा होता है जिस के सबब फुज़ूल नहीं रहतीं। मुबाह चीज़ें (यानी जिन में न सवाब हो न गुनाह) अच्छी निय्यत के साथ करने से कारे सवाब बन जाती हैं।

फुज़ूल गो का झूटा मुबालगा से बचना दुश्वार होता है

येह ज़ेहन में रहे कि फुज़ूल बोलना गुनाह नहीं मगर फुज़ूल बात इसी सूरत में फुज़ूल होती है जब कि कम ज़ियादा किए बग़ैर 100 फ़ीसद सहीह सहीह कही जाए। तश्वीश (यानी परेशानी) की बात येह है कि इस तरह की गुफ़्तगू को नाप तोल कर दुरुस्त बयान करना कि “फुज़ूल” की हद से आगे न बढ़े येह बहुत मुश्किल काम होता है, बारहा झूटा मुबालगा (यानी अस्ल के खिलाफ़ हद से ज़ियादा बढ़ा चढ़ा कर बयान करना) हो जाता है, कभी फुज़ूल बोलने वाला ग़ीबतों, तोहमतों और नाहक़ दिल आज़ारियों वग़ैरा के दलदल में भी जा पड़ता है। लिहाज़ा अफ़्रियत चुप रहने ही में है कि एक चुप सौ सुख।

अलाक़े में दीनी माहौल में ख़ामोशी का किरदार

एक इस्लामी भाई “दावते इस्लामी” के सुन्नतों भरे इज्तिमाअ में ख़ामोशी के मुतअल्लिक़ सुन्नतों भरा बयान सुनने से पहले दीनी माहौल से वाबस्ता होने के बावुजूद बहुत फुज़ूल गो थे, ज़ियादा दुरूद शरीफ़ पढ़ने की भी कोई ख़ास तरीक़ीब न थी। जब उन्होंने ने चुप रहने की कोशिश शुरू की, रोज़ाना एक हज़ार दुरूद शरीफ़ पढ़ना नसीब होने लगा, इस से पहले उन का अनमोल वक़्त इधर उधर की फुज़ूल बहसों में बरबाद हो जाता था। उन्होंने ने ख़ामोशी की

कोशिश शुरू करने के बाद बारह दिन में पढ़े हुए 12 हजार दुरूद शरीफ़ का सवाब मुझ (सगे मदीना को) तोहफ़तन पेश (यानी ईसाले सवाब) किया। उन के बातूनी मिज़ाज के बाइस होने वाली उल्टी सीधी बातों की नुहूसत से उन के ज़ैली हल्के में दावते इस्लामी के दीनी काम को भी नुक़सान पहुंच जाता था। पिछले दिनों उन के हल्के में आपस का इख़िलाफ़ निमटाने के लिए मदनी मश्वरा हुवा, हैरत बालाए हैरत कि उन की ख़ामोशी के सबब **اَلْحَسْبُ لِلّٰهِ** ! सारा झगड़ा बआसानी ख़त्म हो गया। उन के “निगरान” ने खुशी का इज़हार करते हुए उन से बे तकल्लुफ़ी में कुछ इस तरह फ़रमाया : “मुझे बहुत डर लग रहा था कि शायद आप बहस शुरू करेंगे और बात का बतंगड़ बन जाएगा लेकिन आप के ख़ामोशी अपनाने की नेमत ने हमें राहत बख़्शी।” दरअसल बात येह है कि इस से क़ब्ल उन की फ़ुज़ूल बहस और बक बक की आदते बद के सबब “मदनी मश्वरे” वग़ैरा का माहौल ख़राब हो जाया करता था।

दीनी कामों के लिए मदनी हथियार

प्यारे प्यारे इस्लामी भाइयो ! देखा आप ने ? फ़ुज़ूल बातों से बचना दीनी कामों के लिए भी किस क़दर मुफ़ीद है, लिहाज़ा जो सुन्नतों का मुबल्लिग़ है उसे तो ख़ुसूसन हर हाल में सन्जीदा और कम गो होना चाहिए। जो बड़ बड़िया, बातूनी, दूसरों की बात काटने वाला, बार बार बीच में बोल पड़ने वाला, बात बात पर बहस व तक़ारार करने और “बाल की खाल” उतारने वाला हो उस की वजह से दीन के काम को नुक़सान पहुंचने का अन्देशा रहता है, क्यूंकि ख़ामोशी जो कि शैतान को मार भगाने का “बेहतरीन” हथियार है इस से येह बातूनी शख्स महरूम है। हज़रते अबू ज़र ग़िफ़ारी **رَضِيَ اللّٰهُ عَنْهُ** को वसियत करते हुए मुस्तफ़ा जाने रहमत **صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ** ने फ़रमाया : “ख़ामोशी की कसरत को लाज़िम कर लो कि इस

से शैतान दफ़ा होगा और तुम्हें दीन के कामों में मदद मिलेगी ।”

(شعب الإيمان، 4/242، حديث: 4942)

अल्लाह इस से पहले ईमां पे मौत दे दे नुक्सां मेरे सबब से हो सुन्नते नबी का

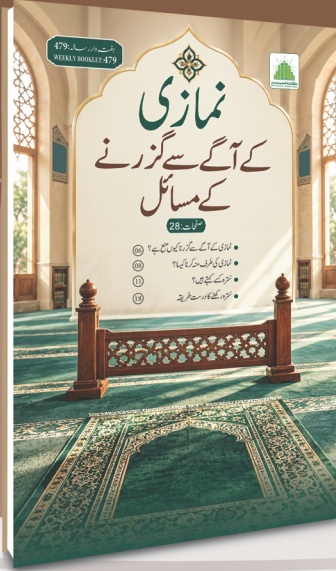
(वसाइले बख़्शिश, स. 178)

صَلُّوْا عَلَى الْحَبِيبِ ❀❀❀ صَلَّى اللهُ عَلَى مُحَمَّدٍ

प्रेहरिस्त

उन्वान	सफ़हा	उन्वान	सफ़हा
ज़बान की आफ़तें बहुत ज़ियादा हैं	2	हज़रते लुक्मान जन्नत के	11
उमर बिन अब्दुल अज़ीज	2	सरदारों में से हैं	
फूट फूट कर रोए		हिक्मत की 4 तारीफ़ात	11
हिकायत की वज़ाहत	2	हज़रते लुक्मान तिब्ब (यानी इलाज)	11
मुतअस्सिर करने के लिए बात चीत के	4	के भी हकीम थे	
मुख्तलिफ़ अन्दाज़ इश्ख़्तियार करना		वॉशरूम में देर तक बैठने के नुक्सानात	12
जैसा सफ़र, वैसा ज़ादे सफ़र होना चाहिए	5	ज़बान व दिल बिगड़ जाएं तो...	12
घर में सुन्नतों भरा माहौल बनाने में	6	फुज़ूल सुवालात की मिसालें	12
ख़ामोशी का किरदार		फुज़ूल गो का झूटे मुबालागे से	14
ग़ैर ज़रूरी सुवालात की आफ़ात	7	बचना दुश्वार होता है	
सथिदुना लुक्मान हकीम رَحْمَةُ اللهِ عَلَيْهِ की हिक्मत	8	अलाक़े में दीनी माहौल	14
ख़ामोशी दानाई है (वाक़िआ)	9	में ख़ामोशी का किरदार	
लुक्मान हकीम कौन थे ?	10	दीनी कामों के लिए मदनी हथियार	15

अगले हफ्ते का रिसाला



DAWATE ISLAMI
INDIA



Delhi : 421, Urdu Market, Matia Mahal, Jama Masjid,
Delhi-110006 ☎ +91-8178862570

Mumbai : 19/20, Mohammad Ali Road, Opp. Mandavi
Post Office, Mumbai-400003 ☎ +91-9320558372

Ahmedabad : Faizane Madina, Tinkonia Bagicha,
Mirzapur, Ahmedabad-380001 ☎ +91-9327168200

Nagpur : Opp. Garib Nawaz Masjid, Saifi Nagar
Road, Mominpura, Nagpur-440018 ☎ +91-9326310099



www.maktabatulmadina.in



feedbackmmhind@gmail.com



For Home Delivery of Books Please Contact on (T&C Apply) ☎ +91-9978626025